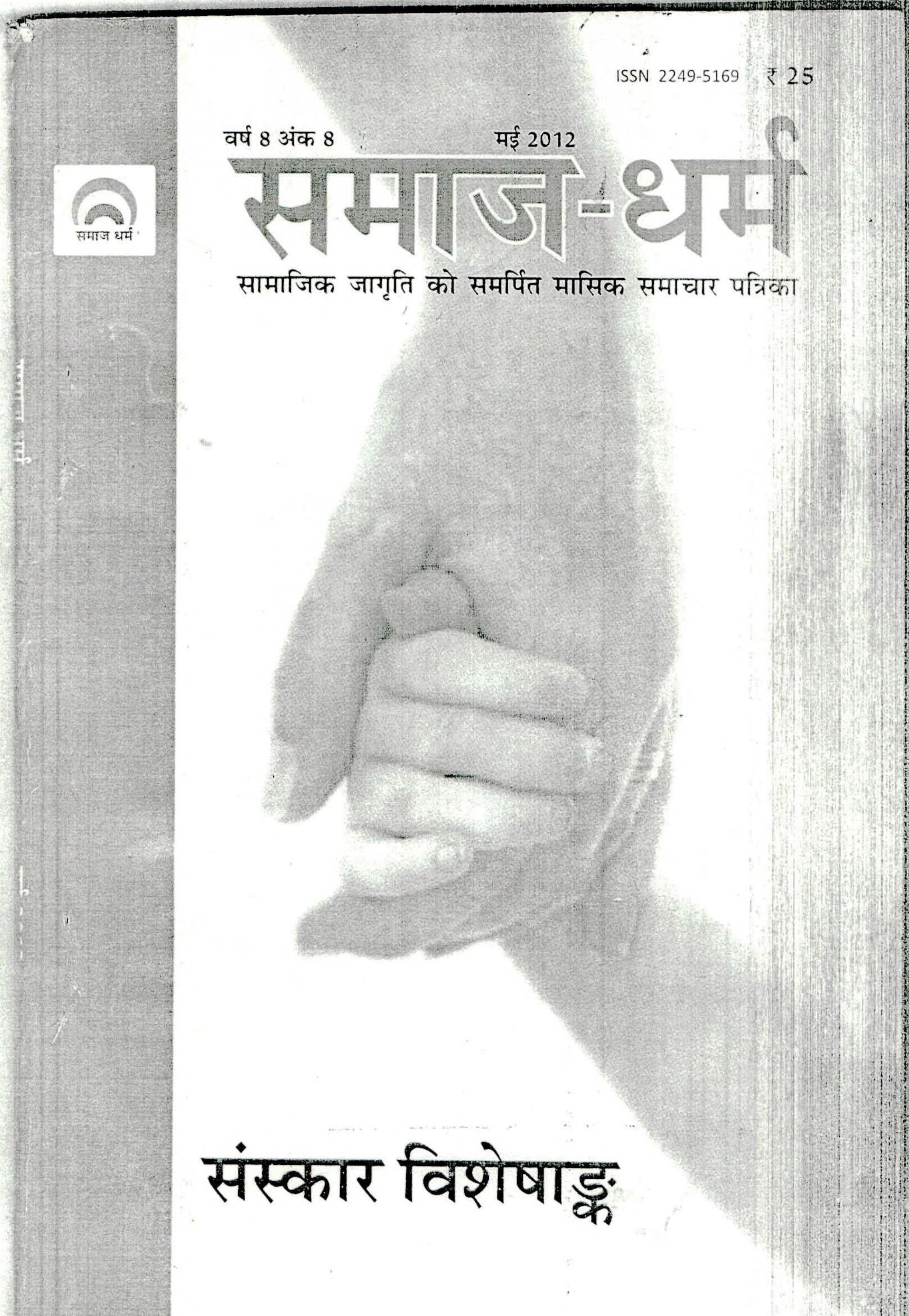

ISSN 2249-5169 ₹ 25

वर्ष 8 अंक 8 मई 2012

समाज-धर्म

सामाजिक जागृति को समर्पित मासिक समाचार पत्रिका

संस्कार विशेषाङ्क

संस्कृति और उसका महत्त्व

- डॉ० शशि प्रभा जैन

संस्कार
विशेषांक

किसी भी देश की समृद्धि और विकास के लिए उसकी एकता अत्यन्त आवश्यक होती है। भारत एक विशाल देश है, जो अनेक भौगोलिक भू-खण्डों में बंटा हुआ है, जिसमें अनगिनत जातियाँ रहती हैं जो भिन्न-भिन्न धर्मों में विश्वास रखती हैं। उनके अलग-अलग सामाजिक रीति-रिवाज़ हैं। अलग-अलग भावनाएँ, वेशभूषाएँ तथा खान-पान हैं। इन सब भिन्नताओं के होते हुए भी भारत सदैव से एक राष्ट्र के रूप में भावात्मक एकता से आबद्ध है। इस एकता का मुख्य कारण है, भिन्नता होते हुए भी सांस्कृतिक एकता। संस्कृति ही मनुष्य को परस्पर भावनात्मक आधार पर जोड़ती है। भौगोलिक सीमाएँ तथा भिन्नताएँ भी इसमें बाधक नहीं होतीं। महात्मा बुद्ध और महावीर के विचारों ने देश की एकता की जड़ों को और गहरा किया है। चैतन्य महाप्रभु, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द यद्यपि बंगाल में हुए, परन्तु सारा देश उनसे प्रभावित हुआ।

संस्कृति का व्यापक स्वरूप :

'संस्कृति' शब्द अपने में सभी संस्कारों, परम्पराओं, सभ्यता के विभिन्न तत्वों तथा लौकिक, आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं को समेटे हुए है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार वेद और स्मृतियाँ हैं, जिनके आधार पर हिन्दू समाज की विभिन्न जातियाँ चल रही हैं। मुसलमान यद्यपि धार्मिक दृष्टि से कुरान शरीफ की आयतों का पालन करते हैं पर व्यावहारिक दृष्टि से अनेक बातों में भारतीय परम्परा को ही मानते हैं। धार्मिक, आध्यात्मिक विषयों में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी तथा अन्य कुछ जँगली जातियाँ विभिन्न प्रकार के संस्कारों को मानंती हैं, पर उनमें अनेक परम्पराएँ समान भी हैं। हिन्दू ईश्वर को साकार मानकर मूर्ति-पूजा करते हैं। लेकिन बहुत से हिन्दू ईश्वर को निराकार मानकर मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं। फिर भी हिन्दू दोनों ही रहते हैं। कुछ मुसलमान ताजिमा, मज़ार आदि की पूजा

करते हैं, कुछ नहीं करते तथा इन बातों का विरोध करते हैं पर मुसलमान दोनों ही हैं। ईसाई अपने गिरजों में जाते हैं, बाईबल का पाठ करते हैं। उन्हें मूर्ति-पूजा से न बैर है न प्रेम है, बल्कि वे उदासीन हैं। वे अपने सन्तों तथा ईसामसीह के चित्र रखते हैं, उसमें श्रद्धा रखते हैं, उसे फूलमाला भी चढ़ाते हैं। यह तो सामान्य रूप है भारतीय संस्कृति की भिन्नता का, किन्तु सबमें आस्तिकता है और सभी ईश्वर की शक्ति को मानकर विश्वासपूर्वक प्रार्थना करते हैं।

भारतीय संस्कृति का महत्त्व :

संस्कृति और परम्पराओं में गहन सम्बन्ध होता है। अनेक परम्पराएँ सभी जातियों और धर्मों में ऐसी हैं, जिनका धर्म से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं हैं। ऐसी परम्पराओं का पालन सभी समान रूप से करते हैं। भारतीय परम्परा में पुत्र जन्मोत्सव और विवाह का उत्सव बड़े उत्साह से बाजे-गाजे के साथ मनाया जाता है। भारतीय हिन्दू, मुसलमान आदि सभी समान रूप से इन दोनों संस्कारों में परम्पराओं का निर्वाह करते हैं, पर उनके धार्मिक नियम भिन्न हैं। घर परिवार में बड़े बूढ़ों का मान करना, उनके प्रति श्रद्धा रखना भारतीय परम्परा है, इसका यथासम्भव निर्वाह सभी भारतीय करते हैं। सामूहिक परिवार की परम्परा का पालन प्रायः सभी भारतीय करते हैं। भूत-प्रेत तथा अनेक देवताओं की पूजा में, मेलों और त्यौहारों में प्रायः सभी समान रूप से सम्मिलित होते हैं। यूरोपीय वेशभूषा का समर्थन हिन्दू, मुसलमान दोनों वर्गों के शिक्षित लोग करते हैं। इस प्रकार की अनेक परम्पराएँ सभी वर्गों में मान्य हैं।

भारतीय संस्कृति जिनका देश-विदेश में गुणगान होता रहता है, वह है भारतीय दर्शन ज्योतिष तथा साहित्य शास्त्र की सूक्ष्मता और विश्लेषणात्मक तथ्यनिरूपण। इसमें आस्तिक आध्यात्मवाद का मिश्रण ही इसे सार्वभौम और सम्मान प्रदान करने में समर्थ हुआ। यही एक ऐसी विशेषता इस संस्कृति में है, जिसके रहस्य को जानकर सभी मुग्ध हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति में जीवन के लौकिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों की अलग-अलग मीमांसा की गई है तथा लौकिक पक्ष को आध्यात्मिक उन्नति के साधन के रूप में सहायक कहा गया है। गीता का सामान्य उपदेश है कि कर्म करो, फल की आसक्ति न रखो, यही कर्मयोग या निष्काम कर्म है। भारतीय संस्कृति जीवन नाटक को कभी दुःखान्त बनाने के पक्ष में नहीं रही है, यही कारण है कि भारतीय काव्य-परम्परा में दुःखान्त

चनाओं का सर्वथा अभाव है।

भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता है आश्रम व्यवस्था, जिसके नुसार जीवन के चार भाग कर दिए गए हैं - ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ तथा संन्यासपूर्ण विरक्त जीवन। इसके अनुसार पहले आश्रम में दूसरे आश्रम के लिए तैयारी की जाती है। इसी क्रम के अन्त में सन्याश्रम तक पहुँच कर पूर्ण विरक्ति की कामना हो जाती है। परिणाम मोक्ष जीवन के चरम लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह भारतीय संस्कृति की सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। आज इसका थोड़ा बहुत निर्वाह हो भी रहा है।

भारतीय सांस्कृतिक एकता का ूल कारण है उसका दार्शनिक दृष्टिकोण ौर धार्मिक भावना। भारतीय दर्शन में नेकता में एकता का समावेश है। यह ार्शनिक विचारधारा ही इस विशाल देश ो विभिन्नता के रहते एकता में बाँधे हुए । दार्शनिक दृष्टिकोण ही देश की ार्मिक एकता का मुख्य आधार है। देश अनेक धार्मिक विचारधाराएँ जन्मीं और ापीं। किन्तु सभी के मूल में एक ही धर्म वना काम करती है। इसीलिए हिन्दू ावान महावीर और बुद्ध को अवतार नते हैं तो बौद्ध और जैन धर्मावलम्बी । कृष्ण को भी इसी श्रद्धा से देखते हैं। ख गुरुओं ने अपने धर्म ग्रंथों में राम की महिमा गाई है। खान-पान, वेशभूषा, सामाजिक रीति-रिवाज आदि सभी में एकरूपता दृष्टिगत होती है। यहाँ तक कि सभी एक-दूसरे के धर्म स्थानों में प्रार्थना करने जाते हैं। इस सांस्कृतिक एकता के लिए मुसलमान विद्वानों का भी योगदान है। अनेक सूफी कवियों ने हिन्दू कथाओं को आधार बनाकर काव्यों की रचना की, जिसमें भारतीय संस्कृति का उच्चकोटि का वर्णन है। रसखान, शेख, आलम, नजीर आदि अनेक कवियों ने कृष्ण भक्ति के सरस काव्य की रचना की है।

यद्यपि भारत सदियों से सांस्कृतिक रूप में एकताबद्ध रहा है। तथापि ऐसा नहीं है कि कभी झगड़े नहीं हुए। झगड़े हुए किन्तु उससे कभी सांस्कृतिक एकता पर आँच नहीं आई और न कभी देश में विघटन का प्रश्न ही उठा। लेकिन आज देश की एकता को भयंकर खतरा पैदा हो गया है। भाषा, प्रान्त, नदी के पानी के प्रश्न, क्षेत्रीय सीमाएँ आदि अनेक प्रश्न उठकर राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता को खतरा पैदा कर रहे हैं। आज देश के विघटन का मूल कारण है स्वार्थों की राजनीति। सत्ता से जुड़े हुए राजनैतिक स्वार्थ आज जातीय, भाषायी, धार्मिक, प्रांतीय आदि विद्वेषों की आग फैला रहे हैं।

भारतीय संस्कृति इतनी व्यापक है

तथा इसका विकास इतने ठोस रूप से हुआ है कि यह इतने प्रकार के आघातों को सहकर भी अभी सुरक्षित है। अपने वर्तमान रूप से इसमें कतिपय विकृतियाँ जैसे छुआछूत, संकीर्णता आदि आ गई हैं या राजनैतिक कारणों से बढ़ गई हैं। उनका परिमार्जन समय स्वयं करता जाएगा।

आज भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रश्न जितना महत्त्वपूर्ण बन गया है, उतना भारतीय इतिहास में कभी नहीं रहा। अगर देश की सांस्कृतिक एकता छिन्न भिन्न होती है, तो देश फिर से गुलाम बन सकता है। इसीलिए देश की सांस्कृतिक एकता का प्रश्न देश की सुरक्षा, अखण्डता और आजादी की रक्षा का प्रश्न मुख्य बन गया है। अतः आज देश की सांस्कृतिक एकता को बनाए रखना, उसे मजबूत करना सभी देशवासियों का परम कर्तव्य हो गया है।

●

- हिन्दी विभाग, श्री अविनाशी लिंगम् यूनिवर्सिटी,
कोयम्बतूर, तमिलना

पं० जगन्नाथ भारद्वाज स्मारक सामाजिक जागृति सम्मान

सामाजिक एवं राजनीतिक जागृति से सम्बद्ध साहित्य के क्षेत्र में समाज धर्म में प्रकाशित श्रेष्ठ लेखक को दिये जाने वाले इस सम्मान की स्थापना श्रीमती सुदेश कश्यप ने अपने पिता पं० जगन्नाथ भारद्वाज की स्मृति में की है। यह सम्मान 2 अक्तूबर को प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव में किसी एक विद्वान को दिया जाता है।

– सम्पादक